डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

सिद्धाश्रम

अरविन्द प्रकाशन, जोधपुर

गुरुदेव
डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी
जोधपुर (राजस्थान) - ३४२००१
फोन: ०२९१-३२२०९

प्राक्कथन

आज जबकि निरंतर बढ़ती जा रही विषमताओं में, पुनः आध्यात्मिकता की छांव ढूँढी जा रही है, फिर से भारतीय परम्पराओं की बात कही-सुनी जाने लगी हैं, भारतीय विद्याओं की पुनर्व्याख्या और समीचीन्ता अनुभव की जा रही है, भौतिकता में छुपी रिक्तता अनुभव की जा रही है - व्यक्ति के समक्ष कोई स्पष्ट मार्ग नहीं है, जो उन्हें पूर्ण तृप्ति दे सके। कहने को तो बहुत से मत हैं, बहुत सी पद्धतियां हैं, लेकिन ऐसा कोई भी नहीं जो उसे अपनी सुगन्ध से आप्लावित कर दे . . . ऐसी घटाटोप स्थिति में एक नाम स्वतः ही उभर कर समक्ष आता है -- **"पूज्यपाद सद्‌गुरु गुरुदेव डा० नारायण दत्त श्रीमाली जी"** का - एक ऐसा दैवी व्यक्तित्व, जिनके पास जाते ही मन की सारी समस्यायें और मन का सारा तनाव, स्वतः समाप्त होने की क्रिया में आ जाता है, और इस तथ्य के साक्षीभूत हैं, उनके सैकड़ों-हजारों वे शिष्य, जो उनका घनिष्ठ साहचर्य प्राप्त कर चुके हैं।

एक श्रेष्ठ ज्योतिषी के रूप में, एक प्रख्यात ज्योतिर्विद् के रूप में वे सम्पूर्ण देश की सीमाओं से

बाहर भी विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में विख्यात रहे हैं, लेकिन उनके विराट व्यक्तित्व का तो यह केवल एक पहलू भर है। वास्तव में तो वे इस विसंगति से भरे नैराश्य और घुटन की पीड़ा के अन्धकार में, एक ज्योतिर्विद् से भी अधिक, एक ज्योतिपुंज के समान हैं, जिनके दैदीप्यमान मुख-मंडल पर सदैव ही आलोकित रहती है -- दैवी आभा। सचमुच उनके नेत्रों में जहां एक ओर उपस्थित है सूर्य जैसा तीव्र तपोबल का प्रभाव, वहीं उनके रोम-रोम से और मुख - मुद्रा से फूटती स्मित हास्य साक्षात पूर्णिमा के चन्द्र के समान ही सुधामय है, किंतु इस ज्योतिपुंज को स्पर्श करने के लिये व्यक्ति को थोड़ा तो प्रयास करना ही होगा, जिस प्रकार से बन्द पड़े कमरे में केवल एक खिड़की खोलना प्रर्याप्त होता है और एक ही क्षण में सूर्य अपनी तेजस्विता और चन्द्रमा अपनी पीयूष रश्मियों का प्रवेश बिना किसी हिचकिचाहट के औदार्य पूर्वक कर देता है, वही स्थिति होती है किसी भी तपः पूत एवं ऐसे ऋषि के समक्ष। सूर्य का प्रकाश या चन्द्रमा की किरणें धीरे-धीरे करके कमरे में प्रवेश नहीं करतीं, यह तो निर्भर करता है कि व्यक्ति ने उनके प्रवेश के लिये क्या स्थान बनाया है, ठीक यही स्थिति है 'पूज्यपाद गुरुदेव' के सन्दर्भ में। प्रारम्भिक प्रयास

करने की आवश्यकता है और आप्लावित कर लेना है अपने आप को उनकी दिव्यता से, केवल एक उपस्थिति के पश्चात्, फिर उनके व्यक्तित्व के बारे में अधिक कुछ कहने-सुनने की आवश्यकता शेष रह ही कहां जाती है!

यह जीवन का एक सत्य है कि ऐसे दिव्य व्यक्तित्व इस धरा पर अधिक समय के लिये अवतीर्ण नहीं होते। पूज्यपाद गुरुदेव भी यदि इस धरा पर उपस्थित हैं, तो केवल अपने गुरुदेव **'पूज्यपाद परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द जी'** की आज्ञा को शिरोधार्य करने के कारण, जिससे कि छल, कपट, व्याभिचार और निरंतर यद्धों से बोझिल हो गई इस धरा पर पुनः शांति और सौजन्यता का वातावरण स्थापित किया जा सके। युद्ध और साम्प्रदायिक तनाव किसी एक स्थान पर ही केन्द्रित नहीं रहते, इनसे उत्पन्न होने वाली घृणा की लहरियां, भय का प्रकोप, धीरे-धीरे बढ़ता हुआ, पूरी मानवता को सहमा कर रख देता है, और यही तो देख रहे हैं हम -- आप जीवन में प्रतिदिन। जिस प्रकार जंगली घास धीरे- धीरे बढ़ती हुई, अपने मध्य में खिले हुए इक्का-दुक्का सुन्दर पुष्पों को भी दबोच कर रख देती है, उन्हें अपने तीक्ष्ण किनारों से विदीर्ण कर देती है, उसी प्रकार यदि कहीं कोई इक्का-दुक्का मानवीय गुणों से युक्त व्यक्ति है भी

तो वह सहम-सिमट जाता है ऐसी ही दूषित प्रवृतियों के बीच में, और इस जंगली घास को, घृणा-वैमनस्य की इन घास-पतवारों को समाप्त करने के लिए जो अस्त्र उठाना पड़ता है, वही साधना जगत में होता है -- दैवी कृपा का बल। आज पूज्यपाद गुरुदेव के वरदहस्त के नीचे **'सिद्धाश्रम साधक परिवार'** संस्था में ऐसे ही सैकड़ों साधक और सुयोग्य शिष्य आगे बढ़कर उन मूल्यों के प्रतिस्थापन के लिये सन्नद्ध हैं, जो कि अन्य लोगों द्वारा केवल की कहा - सुना जाने वाला विषय मात्र है।

आज जबकि विश्व में युद्ध की काली छाया दिन-प्रतिदिन गहरी होती जा रही है, सन्देह और उहापोह के वातावरण में जीवन निराश और हताश होता जा रहा है, तब पूज्यपाद गुरुदेव का इस प्रकार से सक्रिय होना सचमुच आश्चर्यजनक है। **प्रचार और प्रसार से सर्वथा दूर रहते हुए, आलोचनाओं और विरोधों में अपने को अडिग बनाये रखते हुए, उन्होंने मौन रहते हुए, साधनाओं की ऐसी गंगा प्रवहित की है, जो आज गंगासागर जैसी पूर्णता प्राप्त कर चुकी है।** क्योंकि यह नदी बीच में समाप्त होने वाली नदी नहीं है, यह प्रवाहित हुई है एक देवपुंज के द्वारा, और जाकर पूर्णता से मिलती है वहां-- जहां जीवन का महासमुद्र लहरा रहा है। अन्य मतों की भांति

पूज्यपाद सद्गुरु गुरुदेव ने पोथी-पत्रों में बन्द होने वाला ज्ञान या अटपटा और रहस्यमय ज्ञान अपने पाठकों और शिष्यों को नहीं दिया। निरंतर कटु आलोचनाओं के बीच भी **उन्होंने "मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान" पत्रिका द्वारा समाज को ऐसा दुर्लभ ज्ञान और गोपनीय साधनाएं दी हैं, जिनकी उपादेयता का मूल्यांकन, शायद समाज आज नहीं कर पाएगा।**

केवल साधनाओं का ज्ञान ही नहीं, केवल उपदेश ही नहीं, उन्होंने अपने तपस्यात्मक अंश को जिस प्रकार से दीक्षाओं के माध्यम से निःसंकोच वितरित किया है, उसे देखकर तो **यही कहना पड़ता है कि वास्तव में भगवान शिव ही गुरु बनकर अवतरित हुए हैं,** क्योंकि अपना सर्वस्व लुटा देने की प्रवृत्ति भगवान शिव के अतिरिक्त किस अन्य देवी या देवता में नहीं रही है. . . धर्म- चक्र प्रवर्तन है यह! बुद्धत्व का पुनः आगमन है इस धरा पर, जिनत्व का पुनर्प्रकटीकरण है, राम की मर्यादा और कृष्ण का श्रृंगार भी तो! क्योंकि गुरुदेव ने पहली बार अपने व्यक्तित्व से शास्त्रों में निहित इस तथ्य को प्रकट किया है कि गुरु तो वास्तव में चौंसठ कलाओं से पूर्ण व्यक्तित्व होते हैं, जीवन के प्रत्येक रंग, प्रत्येक सुख-दुख और विसंगति का ज्ञान होता है उन्हें, और इसी की

पुष्टि होती है।

पूज्यपाद गुरु देव ने स्वयं गृहस्थ जीवन को "धारण" कर एक आम व्यक्ति की तरह ही नित्यप्रति की समस्याओं से जूझ कर, केवल एक परिवार का ही नहीं, अपने सैकड़ों हजारों शिष्य रूपी पुत्रों का भी दायित्व अत्यन्त कुशलता पूर्वक वहन कर, जिस प्रकार प्राचीन गुरु - शिष्य परम्परा का एक ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत किया है, उसकी तो समता आने वाले समय में सम्भव ही नहीं हो सकेगी। ऐसे ही मानवीय गुणों से आपूरित, तपः पुंज से विभूषित, ऋषियों और मुनियों के जीवन में चिन्तनीय, योगियों द्वारा वन्दनीय पूज्यपाद गुरुदेव को शत् शत् वन्दन।

-- प्रकाशक

साक्षी है सिद्धाश्रम

सिद्धाश्रम, पृथ्वी को हमारे पूर्वजों, ऋषियों, देवताओं और दसों दिशाओं का वरदान है, जिसकी वजह से इस घोर भौतिकता में भी आध्यात्मिकता का संतुलन बना हुआ है, और जहां पर पहुंचने का स्वप्न प्रत्येक सप्राण, सजग व्यक्ति का रहा है।

सिद्धाश्रम ने समय-समय पर पृथ्वी वासियों को उच्च कोटि के महामानव दिए, जब - जब भी भौतिकता और आध्यात्मिकता का संतुलन बिगड़ने लगा, तब - तब उसने संतुलन को बनाने के लिए वशिष्ठ को भेजा, शिवामित्र को तैयार किया, राम को अवतरित किया, कृष्ण को आम जनता के बीच भेजा, बुद्ध के ध्यान योग को उसकी उपस्थिति में प्रचलित किया, और स्वामी बिशुद्धनन्द, मां आनन्दमयी और कई अन्य सिद्धाश्रम के महामानव हम सब लोगों के बीच उपस्थित हुए।

यहां मैं **"हम सब लोग"** शब्द का प्रयोग कर रहा हूं, क्योंकि दूर खड़ा हुआ हिमालय हमें आनन्द नहीं दे सकता, इसकी अपेक्षा हिमालय पर चढ़ना, उसकी घाटियों में विचरण करना, ज्यादा अनुकूल एवं सुखदायक है, ठीक इसी प्रकार सिद्धाश्रम ने भी इन सब लोगों को सामान्य जनता के बीच भेजा, उसका चिन्तन यही था, कि ये व्यक्ति भी सामान्य जनता की तरह रहें, सामान्य व्यक्तियों की तरह हर्ष और विषाद, दुःख और दैन्य, मित्रता और प्रहार की अनुभूतियों को सहेजें, और आम व्यक्तियों की तरह घुलमिल कर रहें, तभी आम व्यक्ति उसे अपना समझता है, अपने समान अनुभव करता है, और एक नयी दिशा- दृष्टि ग्रहण करता है।

और सिद्धाश्रम साक्षी है, कि मैं तुम लोगों के बीच जीवन्त सजग और सप्राण व्यक्तित्व हूं, भौतिकता और आध्यात्मिकता के संतलुन को बनाए रखना एक कर्त्तव्य है, सामान्य साधकों के बीच उनकी तरह ही हर्ष- विषाद, दुःख और दैन्य को अनुभव करते हुए, जीवन के प्रत्येक क्षण को जीना है, और मैं इस प्रकार के जीवन से तुम लोगों को यह भान कराना चाहता हूं, कि इस प्रकार की विपरीत परिस्थितियों में भी मुस्कुराया जा सकता है, इस प्रकार की परिस्थितियों में भी अडिग रह कर लक्ष्य की ओर पहुंचा जा सकता है, घोर अंधकार में भी ज्ञान के दीपक जलाये जा सकते हैं, और आलोचनाओं की

पंचाग्नि के बीच बैठ करके भी अपनी बात दृढ़ता के साथ कही जा सकती है। तुममें और मुझमें इतना अन्तर है, कि तुम जाओगे तो अपने साथ दुःख और दैन्य, कठिनाइयों और बीमारियों की पोटली लेकर जाओगे, और मैं कपड़े झटक कर निर्विकार भाव से एक तरफ खड़ा हो सकूंगा।

और यह मेरे दृढ़ व्यक्तित्व की प्रबलता है, जीवन के उन्नीस यौवन हिमालय को नापने में व्यतीत कर दिए, और उसके प्रत्येक जर्रे पर कदमों के निशान बना दिए, क्योंकि उस सोये हुए हिमालय को जगाना था, उन गिरी - कन्दराओं में घुस कर बैठे हुए योगियों को खींच कर बाहर लाना था, उन भारतीय विद्याओं को पुनर्जीवित करना था, जो हमारी थाती है, और उन देवताओं को हिमालय में पुनः साकार करना था, जो भौतिकता की गर्द में खो से गए थे।

और मैंने हिमालय के जर्रे-जर्रे के फोटोग्राफ खींचे, एक हाथ में कमण्डल था, और दूसरे हाथ में कैमरा, शरीर पर भगवा लंगोटी थी, तो आंखों में एक दैवी स्वप्न, और उन रूढ़िवादी सन्यासियों का गुट आलोचनाओं की तलवारे भांज रहे थे, कि सन्यासी के पास कैमरा? और मैं सहन शक्ति की ढाल लिये विचरण कर रहा था, क्योंकि मुझे बहुत कुछ करना था, मुझे अपनी शक्ति प्रतिरोघात्मक रूप में व्यय नहीं करनी थी।

और यही स्थिति बनारस के पण्डितो के बीच, जब मंच पर मैंने कहा, कि इस प्रकार से वेदों का अशुद्ध उच्चारण ब्राह्मणत्व का क्षय है, तो उनके मुंह से गालियों की अजस्त्र धारा बह निकली, और लाठियों के प्रहार से इस शरीर को लहुलूहान कर गंगा में फेक दिया, पर दूसरे दिन, उसी मंच पर मैं, ललकार रहा था, कि लाठियों से शरीर तोड़ा जा सकता है, मेरा ज्ञान, मेरा चिन्तन या मेरी विचार - धारा को नहीं।

और यही स्थिति सिद्धाश्रम की थी, वहां पर तपस्वी तो थे, पर श्मशान की तरह खामोशी थी, वहां पर ज्ञान का चिन्तन तो था, परन्तु सुनसान , वीरान और मुरझाए हुए चेहरे चारों ओर विचरण कर रहे थे, ऐसा लग रहा था कि जैसे किसी श्मशान में आ गया होऊं, और पहली बार साधक और साधिकाओं को सिद्ध योगा झील में स्नान करने की प्रक्रिया सिखायी, पहली बार सिद्धाश्रम की धरती पर अप्सराओं से नृत्य कराए, पहली बार मुरझाये हुए चेहरों पर मुस्कुराहट की इबारतें लिखी, पहली बार उस श्मशान की खामोशी में मस्ती, आनन्द और सौन्दर्य के पुष्प विकसित किए, पहली बार उदासी के स्थान पर अट्टाहास और मुस्कुराहट के पुष्प विकसित किए।

और सिद्धाश्रम साक्षी है, कि मैं तुम्हारा गुरु हूं। जीवन में सबसे कठिन कार्य गुरु बनना है, क्योंकि उसे अपने -`आप को हर क्षण दबोचना पड़ता है, हर क्षण शिष्यों की

सन्देहशील नजरों को झेलना पड़ता है, कायर और बुज़दिल शिष्यों की कानाफूसियों को सुनना पड़ता है, और उनके ओछे और घटिया स्तर के चिन्तन को अहसास करना पड़ता है।

पर ये सब तो मैंने जीवन में बहुत देखे है, इन सब को तो मैंने अनुभव किया है, इन सब का अहसास तो मुझे पूरे जीवन भर रहा है, इन शत्रुओं से तो मैं कई बार निबट चुका हूं, और यह बात सत्य है, कि जब जीवन में शत्रु बढ़ते हैं, जब जीवन में आलोचकों की संख्या बढ़ती हैं, तो यह समझ लेना चाहिए कि व्यक्तित्व में धार आ गया है, इसके शब्दों में पैनापन आया है यह रोग और घाव को ऊपर ही ऊपर सहेज नहीं रहा है, अपितु चीर - फाड़ कर मवाद को बाहर निकालने का प्रयास कर रहा है।

और मैं आप लोगों के बीच सप्राण, सजग व्यक्तित्व के रूप में उपस्थित हूं, क्योंकि तुम जिस मुर्दा शरीर को अपने कन्धें पर ढोते हुए चलते हो, मुझे तुम्हारे कन्धों पर से उस लाश को नीचे उतारना है, तुम्हारे चेहरे पर जो परेशानियों की लकीरें हैं, उसे मिटानी है, तुम्हारी आंखों में उदासी का जो अन्धकार घिर गया है, उसे हटाना है, और तुम्हारे जीवन में बुज़दिली का जो भाव आ गया है, उसे समाप्त करना है।

क्योंकि तुम सही अर्थों में शेर हो, तुम लोगों ने व्याघ्र कुल में जन्म लिया है, परन्तु अफसोस इस बात का है, कि मेरे

आने से पहले तुम भेड़ों के बीच खड़े थे, भेड़ों की तरह ही तुमने जीवन जीना सीख लिया था, नीची गर्दन झुकाए, अपमान का घूंट पीते हुए चलना ही तुम्हारी नियति बन गई थी, और मैं तुम्हारे बीच तुम्हारे कुल का, तुम्हें स्मरण कराने आया हूं, यह बताने आया हूं कि तुम मेरे शिष्य हो, और सही अर्थों में व्याघ्र हो, जो उछल कर भारी - भरकम गजराज पर झपट्टा मार सकता है, और उसकी पीठ को लहुलूहान कर सकता है, तुम्हारे सीने में मेरे प्राण उच्चरित हो रहे हैं। तुम्हारी आंखों में वह चमक है, जिसकी लपटों से आलोचक थर्रा सकते हैं। और मेरा यह उद्‌देश्य है, कि मैं तुम्हें, इन सब की उपस्थिति का भान करा सकूं, मैं तुम्हें तुम्हारे व्यक्तित्व से परिचित करा सकूं।

और सिद्धाश्रम साक्षी है, कि इतिहास करवट बदल रहा है, अब तुम्हारी अलसाई हुई आंखों में चेतना का भाव जाग्रत होने लगा है, अपने परिवार और समाज से तन कर कुछ कहने की हिम्मत तुममें आ सकी है, क्योंकि मैं तुम्हें विद्रोह का पाठ पढ़ाने आया हूं, क्योंकि मैं तुम्हें सिखाना चाहता हूं कि इस सड़ी - गली पारिवारिक व्यवस्था पर प्रहार कर सको, मैं तुम्हें अन्धकार से लड़ने की क्षमता देने आया हूं, मैं तुम्हें बताने आया हूं कि 'जीवन' को जीने का एक सलीका है, एक तृप्ति है, एक आनन्द है।

और यह तुम्हारा जीवन, तुम्हारी सम्पति नहीं है, अपितु यह मेरे प्राणों की धड़कन है, तुम्हारे शरीर में जो ऊपर उठने का भाव है, वह मेरी दी हुई चेतना है, तुम्हारे अन्दर जो आगे बढ़ कर मुझमें समा जाने की प्रक्रिया है, वह मेरा आह्वान है, पर इस आह्वान को, इस निमंत्रण को अस्वीकार कर तुम स्वयं घाटे में रहोगे, तुम्हारे ठिठकने से तुम्हारा ही जीवन सामान्य बन कर रह जायेगा। अब और ज्यादा देरी उचित नहीं, पहले ही बहुत अधिक विलम्ब हो चुका है, अब तो वह समय आ गया है, कि तुम यह अहसास कर सको, कि तुम में एक चेतना है, एक तड़प है, एक आग है, जो इस युग को नेतृत्व दे सकता है, जो आने वाली पीढ़ियों को मार्ग दर्शन दे सकता है, जो पूरी तरह से गुरु के प्रति समर्पित हो सकता है, और यह समर्पण आने वाले इतिहास की इबारतें होंगी, आने वाले युग में, आने वाले समय में तुम गर्व से कह सकोगे कि तुम निखिलेश्वरानन्द जी के शिष्य रहे हो।

अब तुम्हें ठिठकना नहीं है, पारिवारिक जिम्मेवारियों के बोझ के तले अपने व्यक्तित्व को मटियामेट नहीं करना है, चिन्ताओं के बोझ तले अब तुम्हें सिसकना नहीं है, अपितु तेजी के साथ अपने व्याघ्

होने का परिचय देना है, तुम्हें बता देना है, कि तुम तेजस्वी व्यक्तित्व के शिष्य हो, उसकी चैतन्यता हो, उसकी धड़कन हो और तुम में परिवार को तोड़ कर खड़े होने की क्षमता है, और यह समर्पण स्वयं ही तुम्हें सिद्धियां प्रदान कर देगा, क्योंकि समर्पण ही सिद्धि है। अपने - आप को विसर्जित कर देना ही जीवन की पूर्णता है, अपने आपको गुरु के प्राणों में समाहित कर देना ही समस्त देवताओं की साधना है, उनके दर्शन हैं, उनकी उपस्थिति है।

और सिद्धाश्रम साक्षी है, कि आज से तुम्हारे प्रत्येक क्षण का हिसाब होना चाहिए, जिससे कि तुम समर्पित हो सको, गुरु की बांहों में समा सको, उनके हृदय में गहराई के साथ उतर सको, और पूर्णता प्राप्त कर सको। तुम मुझे श्रद्धा और समर्पण दो, मैं तुम्हें पूर्णता दे रहा हूं।

ooooo

सिद्धाश्रम

की दिव्य आत्माएं. . .

सिद्धाश्रम ऐसा महान आश्रम है जो आध्यात्मिक पुनीत स्थली है, प्रत्येक साधक वहां पहुंचने का सपना अपने मन में संजोये रहता है, क्योंकि सिद्धाश्रम दिव्यता व पूर्णता का परम स्थल है और जब साधक अपनी साधनाओं में **अमृत सिद्धि** प्राप्त कर सशरीर अथवा देह त्याग के पश्चात् वहां पहुंच जाता है, तो वह स्वयं दिव्य होकर अपनी आने वाली पीढ़ियों का हर प्रकार से भला कर सकता है, **लेकिन क्या हर कोई सिद्धाश्रम जा सकता है?**

मानसरोवर और कैलाश पर्वत से उत्तर दिशा की ओर स्थित लम्बा-चौड़ा अद्वितीय, प्रकृति के गोद में स्थित दिव्य आश्रम जिसकी ब्रह्मा जी के आदेश से स्वयं विश्वकर्मा ने अपने हाथों से रचना की, श्री विष्णु ने इसकी भूमि, प्रकृति और वायुमण्डल को सजीव सप्राण , सचेतना युक्त बनाया और भगवान शंकर की कृपा से यह अजर - अमर है। यहां रहने वाले किसी भी योगी, सन्यांसी को दुर्बलता, वृद्धावस्था

व्याप्त नहीं होती, यह तो अमृत का दिव्य - धाम है।

सिद्धाश्रम की सिद्धयोगा झील, सिद्धाश्रम के सिद्धयोगी, ऊंचे - ऊंचे वृक्ष , सुगंधित पुष्प लताएं , छोटे - छोटे मनोहर आश्रम, सात्विक वातावरण की एक झलक ही है, इसका पूर्ण विवरण तो हजारों पृष्ठों में भी नहीं लिखा जा सकता।

सिद्धाश्रम के अपने नियम हैं, **यहां प्रवेश पाने का वही अधिकारी है, जिसने स्वयं 'दिव्य दीक्षा' प्राप्त कर दिव्य कोटि की साधना सम्पन्न की हो, उसे ऐसे गुरु से साधना प्राप्त हुई हो जो स्वयं सिद्धाश्रम में प्रवेश कर सका हो, जिन्हें योग - माया, मंत्र-तंत्र का सम्पूर्ण ज्ञान हो,** क्योंकि सिद्धाश्रम में प्रवेश पाने के पश्चात् उसमें अपने आप में ऐसी क्षमता आ जाती है कि वह सशरीर जहां भी जाना चाहे जा सकता है, संसार में कहीं भी विचरण कर सकता है, सशरीर वापिस गृहस्थ में आ सकता है और जब चाहे सदेह या सूक्ष्म शरीर से इस आश्रम में आ जा सकता है।

सिद्धाश्रम की दिव्य आत्माएं -

सिद्धाश्रम में तन्मयता है, आनन्द है, सिद्धाश्रम में भावना ही लोक - कल्याण की भावना है, सिद्धाश्रम

में योगी अपने बारे में नहीं सोचते, उनका केवल एक ही चिन्तन है कि किस प्रकार जन - जन में साधना - तत्व जागृत किया जाय, किस प्रकार उनकी पीड़ाओं को दूर किया जाय, किस प्रकार साधकों के जीवन में आनन्द का उद्वेग उत्पन्न किया जाय, किस प्रकार मंत्रमय, तंत्रमय वातावरण की रचना की जाय, किस प्रकार मन की ही नहीं साधकों के तन की बाधाएं भी दूर की जाएं, जिससे साधक सदैव स्वस्थ और निरोगी रह कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ें, श्रेष्ठ साधक का लक्ष्य सिद्धाश्रम में प्रवेश पाना तो है ही, लेकिन उसके पहले वह अपने इस लौकिक जगत की मूल - भूत सभी आवश्यकताओं की पूर्ति भी कर लेना चाहता है, जिससे वह स्वयं कामनाओं से रहित होकर आगे बढ़ सके।

अधूरी इच्छाएं अतृप्त आत्माओं को जन्म देती हैं, ये आत्माए भटकती रहती हैं, क्योंकि इनके जीवन में कुछ ऐसी कमियां रह जाती हैं, जो उन्हें हर समय कचोटती रहती हैं, उनकी सन्तानों को दुख और पीड़ा रहती है, ऐसी अतृप्त आत्माएं सिद्धाश्रम में प्रवेश योग्य नहीं हैं, क्योंकि उन्होंने स्वयं अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त नहीं की।

क्या आप साधक है?

साधक जंगल में धूनी जगाने वाला व्यक्ति नहीं है, साधक हिमालय पर्वत के बीच, घर से भाग कर तपस्या करने वाला व्यक्ति भी नहीं है, श्मशान की राख रगड़ने वाला व्यक्ति भी साधक नहीं है, सच्चा साधक तो अपने जीवन में अपने कर्त्तव्यों को निभाते हुए, गुरु कृपा से युक्त , गुरु से दीक्षा प्राप्त कर साधना करने वाला व्यक्ति है, जिसका लक्ष्य है गुरु द्वारा बताये गये मार्ग पर आगे बढ़ते हुए कुण्डलिनी जागरण करना, मूलाधार से प्रारम्भ कर, समस्त चक्रों का भेदन कर, सहस्रार दर्शन करना, ऐसे साधक को केवल गुरु आशीर्वाद ही नहीं, सिद्धाश्रम के समस्त योगियों की कृपा प्राप्त होती है, क्योंकि गुरु कृपा ही तो सिद्धाश्रम का द्वार है।

सिद्धाश्रम की दिव्य आत्माओं से संदेश -

साधक यदि अपने निर्मल हृदय से कोई साधना करता है, अपनी विकट घड़ी में आह्वान करता है, संकट के समय पुकारता है, किसी कार्य के लिए उसे विशेष आत्मबल की आवश्यकता होती है, आने वाले किसी बड़े खतरे का उसे ज्ञान नहीं होता है, तो क्या उसे संदेश

प्राप्त हो सकता है?

जहां भावना ही कल्याण की है तो संदेश क्यों नहीं प्राप्त होगा, अवश्य प्राप्त होगा, लेकिन आवश्यकता इस बात की है कि साधक निरन्तर अपने साधना तत्व को प्रबल बनाये रखे, वह लोगों के बहकावे में आकर अपने मार्ग को न छोड़े और सबसे बड़ी बात उसे यह प्रबल विश्वास हर समय होना चाहिए कि मुझे ऐसा आशीर्वाद प्राप्त है, जिससे मेरे संकट अपने - आप दूर होंगे, भावी खतरों के बारे में चाहे वह उसके कार्य से संबंधित हो, परिवार से संबंधित हो, बीमारी से संबंधित हो अथवा किसी दुर्घटना से, यदि वह अपने आपको ऐसी शक्ति के भरोसे छोड़ कर अपनी साधना, अपने कर्त्तव्य पूरे करता रहता है, तो उसे हर स्थिति में संदेश अवश्य प्राप्त होता है।

संदेश का माध्यम सिद्धाश्रम की अशरीरी आत्माओं के लिए सूक्ष्म रूप से विचरण करना, किसी भी प्रकार का स्वरूप ग्रहण करना संभव है, इसलिए यह संदेश साधक को सोते अथवा जागते, कार्य करते अथवा यात्रा करते दिन अथवा रात को कभी भी प्राप्त हो सकते हैं, इसके लिए माध्यम उसका स्वप्न भी हो सकता है, इसके लिए माध्यम कोई अन्य व्यक्ति भी हो सकता है,

उसके सामने उसकी पूजा में साधना करते हुए भी संदेश अकस्मात प्राप्त हो सकता है ,

यह विभिन्न रूपों में प्राप्त हो सकता है, इसे प्राप्त कर समझने की आवश्यकता अवश्य है।

सिद्धाश्रम की आत्माओं का आह्वान -

साधक साधना के द्वारा आत्मा का आह्वान कर उससे प्रश्न कर अपनी समस्याओं के संबंध में पूछ सकता है, इस आह्वान जिसे " **सिद्ध आत्म आह्वान** " कहा जाता है का प्रयोग पूर्ण विधि - विधान से सम्पन्न करना चाहिए, जब भी आप इन आत्माओं को बुलाएं, तो उन्हें सम्मान दें, नम्रता से शिष्ट भाषा का प्रयोग कर प्रश्न पूछें और तब ये सिद्ध आत्माएं आप द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर पूर्ण प्रसन्नता के साथ देती है, लेकिन कभी भी प्रयोग के तौर पर, हंसी के रूप में अथवा दूसरों के सामने अपने चातुर्य को बताने के लिए अथवा परखने के उद्देश्य से अथवा गलत प्रश्नों को पूछने के लिए, किसी गलत कार्य की पूर्ति करने की इच्छा रखते हुए, सिद्ध आत्मा का आह्वान उचित नहीं है, इससे उस समय सिद्धाश्रम से आत्माएं आती तो अवश्य हैं लेकिन साधक को ऐसे श्राप मिल सकते हैं जिससे आगे का

जीवन नरकमय हो सकता है, जब भी यह कार्य करें, पूर्ण सात्विक भाव से सम्पन्न करें।

सिद्धाश्रम आत्म - आह्वान कैसे करें ?

रविवार का दिन ब्रह्माण्ड के तेजस्वी देव 'सूर्य देव' का दिन है, और इस दिन सूर्योदय के पश्चात् यह प्रयोग करना सर्वथा उचित है। इस दिन साधक स्नान कर स्वच्छ सफेद वस्त्र धारण कर अपने पूजा स्थान में बैठे, पूजा स्थान में बार - बार किसी प्रकार का व्यवधान पड़ने की आशंका हो तो एकान्त कमरे में प्रयोग सम्पन्न करें एवं दरवाजा भिड़ा कर थोड़ा सा खुला रखें।

अपने सामने **"बड़ा गुरु चित्र"** तथा **" सिद्धाश्रम संस्पर्शित गुरु यंत्र"** स्थापित करें, तांत्रोक्त विधि द्वारा इस विशिष्ट **"गुरु यंत्र "** का पूजन कर **सिद्धाश्रम चैतन्य रहस्य माला** द्वारा गुरु मंत्र का जप सम्पन्न करें इस प्रकार इस माला से पांच माला मंत्र जप सम्पन्न करें, कमरे में धूप और अगरबत्ती अवश्य ही जलती रहे।

अब साधक कांसे की कटोरी में **" आत्म यंत्र"** स्थापित करें तथा उस पर केवल चंदन तथा केसर चढ़ाएं क्योंकि सिद्धाश्रम की विशिष्ट आत्माओं का पूजन

सात्विक रूप से चंदन और केसर द्वारा ही किया जाता है, अब अपने सामने एक कागज पर पहले से लिख कर रखे हुए **सिद्धात्मा बीज मंत्र** का जप प्रारम्भ करें।

<u>सिद्धात्मा बीज मंत्र</u> -

ह्रीं सिद्धात्मा भं सं मं पं सं क्षं दृष्ट्वा इति ।।

अब इस मंत्र को **"सिद्धाश्रम चैतन्य रहस्य माला"** द्वारा ही उत्तर दिशा की ओर मुंह कर जोर - जोर से जप करना प्रारम्भ करें, एक माला मंत्र जप होते ही पुनः पांच बार गुरु मन्त्र का जप करें और दूसरी माला बीज मंत्र का जप करें।

साधक को तीन माला जप करते - करते एक रहस्यमय वातावरण का अनुभव होने लगता है। ऐसा लगता है कि कोई आपके ऊपर आशीर्वाद मुद्रा में हाथ किए खड़े हैं, शरीर के रोम - रोम खड़े हो जाते हैं **इस स्थिति में साधक माला को रख कर, दोनों हाथ जोड़ कर गुरु मंत्र बोले और किसी प्रश्न विशेष को जिसका उत्तर वह जानना चाहता है पूछे**, यह प्रश्न किसी भी प्रकार का हो सकता है, आत्मा से प्रश्न पूछते समय संकोच नहीं करना चाहिए।

उसी समय जैसे कि कोई बिजली कौंधी हो, साधक को कटोरी हिलती हुई प्रतीत होती है और उसे उस प्रश्न विशेष का उत्तर प्राप्त होता है, अपने कार्यों के संबंध में संदेश प्राप्त होता है, इस संदेश को पूर्ण रूप से समझ कर उसकी व्याख्या करनी चाहिए और जब वह कान्तिमान स्थिति शान्त हो, तो साधक को गुरु आरती सम्पन्न करनी चाहिए।

इस प्रकार एक बार पूर्ण विधि- विधान सहित प्रयोग सम्पन्न करने के पश्चात् *साधक कभी भी किसी भी कार्य के संबंध में निर्देश प्राप्त करने हेतु सिद्धात्मा बीज मंत्र का २१ बार जप करने ऐसे स्पष्ट दिशा - निर्देश प्राप्त होता है।*

सिद्धात्मा प्रवेश यदि आपके घर में हो जाता है तो आप यह निश्चित जानिए कि हर कार्य के संबंध में आपको दिशा - निर्देश प्राप्त होंगे, यदि कोई आपको धोखा देने का प्रयास करेगा तो सिद्धात्मा से संदेश प्राप्त होगा कि अमुक व्यक्ति के कार्य न करें, यदि कोई दुर्घटना होने वाली है, तो तत्काल संदेश प्राप्त होगा कि अमुक यात्रा न करें, अथवा अमुक स्थान पर न जाएं।

इन संदेशों को समझते हुए इनके अनुसार कार्य करने की पूर्ण आवश्यकता है तथा आगे निरन्तर संदेश

प्राप्त होते रहते हैं, साथ ही अपनी साधना निरन्तर करते रहें, साधना के पथ से विचलित हुए साधक के लिए कोई भी मार्ग खुला नहीं रहता है।

पूज्य गुरुदेव के शिष्यों में कई शिष्य, जो कि साधना में एक दिशेष स्तर प्राप्त कर चुके हैं, उन्हें इस प्रकार की दिव्य आत्माओं के संदेश अपने जीवन में निरंतर प्राप्त होते रहते हैं।

00000

जब मैं पहली बार गया...

अपने आठ वर्षों के साधनात्मक जीवन में यह पवित्र सिद्धाश्रम शब्द मेरे मानस में बराबर घुमड़ता रहा। अमृत के इस दिव्य - धाम को मैं अपनी आंखों से देखना चाहता था और इसीलिए पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी का शिष्यत्व प्राप्त होते ही मैंने उन्हें अपने संकल्प से अवगत करा दिया था। उस समय उन्होंने आशीर्वाद तो दिया पर यह भी इंगित कर दिया था कि इसके लिए अत्यन्त उच्च साधनात्मक धरातल प्राप्त करना अनिवार्य है। तुम्हें स्वयं को पूर्णरूपेण उच्चकोटि की साधनाओं में निमग्न करना होगा।

फिर तो उन्होंने अगले पांच वर्षों तक सिद्धाश्रम के बिषय में मुझसे कोई चर्चा ही नहीं की। प्रसंग चलने पर भी टाल जाते, 'अभी समय नहीं आया।' मैंने भी मौन साध लिया

और पूरी क्षमता के साथ साधनाओं में लीन हो गया। कुछ ही दिनों के अन्तराल में मैं समझ गया था कि गुरुदेव अत्यधिक अनुशासन - प्रिय और कठोर हैं, शिष्य की शिथिलता उनकी सहन -शक्ति से परे है। निरन्तर साधनाओं में शिष्यों को लगाये रखना और उन्हें उन्नति के पथ पर अग्रसर करना ही उनका ध्येय है।

उनके सानिध्य में रहकर मैंने सर्वप्रथम **दिव्य तेजस मंत्र** की साधना में आंतरिक जीवन को पवित्र किया तथा कुण्डलिनी जागरण का अभ्यास कर षट्चक्र भेदन में सफलता प्राप्त की। कुछ समय बाद मैं सहस्रार में प्राण - वायु स्थापन कर समाधिस्थ होने लगा। तत्पश्चात मैंने महाविद्या साधना सिद्ध करने का निश्चय किया। आरम्भ में कुछ असफलताएं भी मिलीं, पर अन्त में मेरी साधना सफल हुई और पूज्य गुरुदेव ने मेरा '**ब्राह्मी अभिषेक**' किया।

और मेरे जीवन का वह स्वर्णिम प्रभात भी आ पहुंचा, जब गुरुदेव जी ने मुझे अपने साथ सशरीर सिद्धाश्रम चलने की अनुमति प्रदान की। रहस्यमय तरीके से मुस्कराते हुए उन्होंने मुझसे कहा, " माउंट आबू चलने की तैयारी करो।" अगले ही दिन मैं, गुरुदेव जी और अन्य कई शिष्यों के साथ माउंट आबू पहुंच गए। कई मंदिरों में दर्शन कराने के पश्चात गुरुदेव जी मुझे लेकर गुरु शिखर नामक पर्वत के पीछे गए।

वहां एक प्रस्तर खंड पड़ा था वह अन्य शिलाओं से सर्वथा भिन्न था। उसकी दिव्यता, उसकी जीवन्तता स्पष्ट अनुभव हुई ।

उस विशाल प्रस्तर खंड पर गुरुदेव जी ने मुझे अपने साथ बिठा लिया और **मुझे नेत्र बंद करने की आज्ञा दी। नेत्र बंद करते ही मुझे वह प्रस्तर खंड गतिशील अनुभव हुआ, मानों वायु में उड़ा जा रहा हो। लगभग पांच मिनट बाद जब नेत्र खोलने की आज्ञा हुई तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा।** वह स्थान पूर्णतः भिन्न था।

मेरे समक्ष बर्फीली पर्वत श्रृंखला के मध्य एक विशाल द्वार था। पास ही एक वट- वृक्ष था जिसकी बांयी ओर सुरम्य सरोवर था। गुरुदेव जी सरोवर में उतर गये। मैंने भी उनका अनुसरण किया, धीरे - धीरे पानी वक्षस्थल तक आ पहुंचा पर वे बराबर गतिशील थे। अधिक आगे बढ़ने पर हम पूरी तरह जल - मग्न हो गये पर श्वास प्रक्रिया पूर्ववत् ही चलती रही। कहीं कोई असुविधा नहीं हो रही थी।

अब एक प्रकाशवान गुफा दृष्टि गोचर हुई। गुरुदेव के पहुंचते ही उसका द्वार स्वतः खुल गया। द्वार के भीतर प्रविष्ट होते ही मेरे सारे शरीर में अन्तश्चेतना और प्राण ऊर्जा प्रवाहमान हो गई। मैं अचम्भे में था कि उस बर्फीले प्रदेश में जहां घास का तिनका भी नहीं उगता वहां उस द्वार के भीतर प्रकृति का ही साम्राज्य था। हरे - भरे नवीन वृक्ष , हजारों प्रकार

के पुष्प उस भूखण्ड को इन्द्र के नन्दन - कानन की संज्ञा दे रहे थे। उन पुष्पों की मधुर गंध से शरीर, मन और प्राण सुवासित हो उठे।

अब हम आश्रम के मुख्य भाग में प्रवेश कर गए थे जहां मृगचर्म पहने हुए कई सन्यासी विचरण कर रहे थे। गौरवर्ण, बलिष्ठ और आर्यों की तरह लम्बी-चौडी काया, मुख - मण्डल पर तपस्या का ओज और कन्धों पर लहराती हुई जटाएं उनके भव्य व्यक्तित्व को साकार कर रही थीं। गुरुदेव जी को देखते ही सब एक बारगी थम से जाते और अपना कमण्डल एक ओर रखकर साष्टांग दण्डवत करने लग जाते।

मनोहारी पर्णकुटियों के बीच से गुजरते हुए हम सिद्धयोगा झील तक पहुंचे। नीले पारदर्शी जल की लहरों पर कई साधक स्फटिक नौकाओं में विचरण करते हुए आह्लादित हो रहे थे। कई साधिकायें उस स्वच्छ निर्मल जल में स्नान कर एक दूसरे पर पानी उछाल रहीं थीं तो उसी झील में कुछ योगी संध्या वन्दन कर रहे थे। सारा वातावरण उत्साह, उमंग, मस्ती और आनन्द से भरा हुआ था।

गुरुदेव जी की आज्ञा से मैंने झील में उतर कर स्नान भी किया और बाहर निकलते ही मेरे मन में उमंग

और उत्साह की लहर सी फूट पड़ी। मेरा सम्पूर्ण शरीर अत्यधिक सुन्दर, आकर्षक और तेजस्वी हो गया था और मैं स्वयं को अपनी उम्र से कई वर्ष कम का युवक अनुभव कर रहा था।

झील के बायें पार्श्व में ही एक दिव्य उद्यान था, जहां श्यामवर्णी हिरण निर्द्वन्द्व, निश्चिन्त घूम रहे थे। कई आकर्षक साधिकाएं उन्मुक्त भाव से बैठी परस्पर चुहल कर रही थीं, और कई मृग शावक बैठे-बैठे उन्हें टुकुर - टुकुर निहार रहे थे। एक स्थान पर अत्यन्त भव्य स्फटिक शिलाओं पर कई ऋषि-मुनि ध्यानस्थ थे। सभी के मुख - मण्डल तेज युक्त, दिव्य आभा से ओत- प्रोत थे, जिसे देखते ही मन में उनके प्रति नमन करने की इच्छा हो रही थी।

उद्यान के अन्त में एक अत्यन्त घना और छायादार वृक्ष था, उसके पत्ते ताम्रवर्णी थे, जिनमें से हल्का प्रकाश झर रहा था। पूरा वृक्ष गुलाबी पुष्पों से आच्छादित था। वहां रुककर **गुरुदेव जी ने मुझे बताया, 'यह मूल कल्प -वृक्ष है, यहां जिस वस्तु की भी इच्छा की जाती है, प्रकृति स्वतः ही उसकी पूर्ति तत्क्षण कर देती है।'** कुछ क्षणों के लिए मैं कल्प - वृक्ष के नीचे ध्यान मग्न होकर बैठ गया और मन में भगवान श्री कृष्ण

के दर्शन की इच्छा प्रकट की। तुरन्त ही *एक दिव्य प्रकाश पुंज मेरे समक्ष उपस्थित हुआ और अगले ही क्षण वह प्रकाश भगवान श्री कृष्ण की मनमोहिनी छवि में साकार हो उठा - पीताम्बर धारी, गले में वैजयंती माला, सिर पर मोर मुकुट और हाथों में बांसुरी, - उनके होठों पर हृदयग्राही मुस्कान खेल रही थी।* मेरा रोम - रोम पुलकित हो उंठा, अपने आराध्य प्रभु के जाज्वल्यमान स्वरुप के दर्शन कर, मैं कृत्य-कृत्य अनुभव करने लगा।

तभी गुरुदेव जी ने आगे अग्रसर होने का संकेत किया। आगे कुछ हलचल सी सुनाई दे रही थी। देखा तो **देवांगनाओं और अप्सराओं का समूह राह के दोनों ओर खड़ा था, गुरुदेव के दर्शन के लिए, उनमें आपस में ही कहासुनी हो रही थी।** हर कोई ग्रीवा ऊंची कर सामने खड़ी होने की आकांक्षी थी पर गुरुदेव जी तटस्थ भाव से आगे बढ़ते गये, किसी की ओर दृष्टि तक नहीं डाली।

आगे ऋषियों की कोई सभा हो रही थी। वहां बैठे हुए सभी ऋषि-मुनि, योगी, सन्यासी देव- दूत से प्रतीत हो रहे थे। उनके पुष्ट शरीर से एक ऐसी ज्योति, एक ऐसा प्रकाश प्रस्फुटित हो रहा था जो इस धरती पर सम्भव ही न था। गुरुदेव जी के पहुंचते ही सभी

आत्मविभोर हो उठे, उनका पूरा शरीर रोमांचित हो उठा और अत्यंत विनम्रता से उन्होंने गुरुदेव जी से कुछ क्षण वहां बिताने का अनुरोध किया।

अब वहीं पर अद्वितीय अनिन्द्य सुन्दरी अप्सरा 'उर्वशी' ने मंगल वाद्यों के साथ सिद्ध नृत्य प्रारम्भ किया। उसके चपल नृत्य ने एक अपूर्व समां चारों ओर व्याप्त कर दिया, जिसकी कोई तुलना ही नहीं हो सकती। नृत्य की समाप्ति पर पूज्य गुरुदेव की अभ्यर्थना की गई और पूज्य गुरुदेव भी सबको आशीर्वाद देते हुए उठ खड़े हुए।

इसके आगे जाने पर प्रतिबन्ध था परन्तु पूज्य गुरुदवे के साथ जाने में कोई रोक टोक नहीं थी। थोड़ी

चरणों में सिर रखकर फफक कर रो पड़ा। तत्क्षण ही ऐसा आभास हुआ मानों मेरी ही आत्मा, मेरे ही प्राण सामने बैठे हों। भावविह्वल होकर मैं अवरुद्ध कंठ से , अपने अश्रुओं की अविरल धारा से उनके चरण प्रक्षालित करता रहा। अर्धनिमिलित नेत्रों से मैं उनके सुखद दिव्य स्पर्श को अनुभव कर रहा था। कितना समय बीत गया इसका मुझे भान नहीं। अचानक पूज्य गुरुदेव का हाथ मेरी पीठ पर पड़ा ।आंखे खोलकर चैतन्य हुआ तो वहां न तो कोई गुफा थी, न ही दादागुरुदेव जी। मैं पुनः उसी वट -वृक्ष के नीचे प्रस्तर खण्ड पर बैठा था। तत्पश्चात् पूज्य गुरुदेव ने मेरे नेत्र बन्द करा कर, वायु मार्ग से पुनः मुझे माउंट आबू में ले आए।

वास्तव में ही **मैं पूज्य गुरुदेव स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का आभारी हूं कि उन्होंने अत्यधिक कृपा कर, मुझे शिष्य रूप में स्वीकार किया और इस चोले को सिद्धाश्रम तक पहुंचने की सामर्थ्य प्रदान की।** मेरे शरीर का रोम रोम उनके प्रति ऋणी है , कृतज्ञ है।

०००००

सिद्धाश्रम जहाँ प्रवेश पाया जा सकता है

सिद्धाश्रम का नाम लेते ही सारा शरीर पुलकित, प्राणवान और पवित्र हो जाता है, जब व्यक्ति इस जीवन में पशु जीवन से ऊपर उठकर मानव जीवन में प्रवेश करता है, तभी से उसके मन में यह आकांक्षा घर कर जाती है कि वह इस मानव देह को यह सौभायाग्य प्रदान करे कि वह इस अधोमुखी जीवन से ऊपर उठाकर, ऊर्ध्वमुखी जीवन जीता हुआ एक बार-केवल एक बार सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सके और नहीं तो मात्र दर्शन कर सके।

मैंने अत्यधिक आग्रह पर सिद्धाश्रम के बारे में जो जानकारी दी थी, उससे पहली बार संसार को सिद्धाश्रम के बारे में पूरी जानकारी मिल सकी थी, यों तो भारत के उच्च ग्रन्थों में सिद्धाश्रम या ज्ञानगंज के बारे में विवरण मिल जाता है, परन्तु वह कहाँ है, किस

स्थान पर है, इसके बारे में पूरा ज्ञान सामान्य जनमानस को नहीं था, लेख में इतना सब कुछ देने से उच्च स्तर के योगियों ने मेरी आलोचना भी की थी, कि इस प्रकार से गोपनीयता भंग होती है। पर मैं समझता हूँ कि अब वह समय आ गया है कि सामान्य साधक भी अपने इस दिव्य आश्रम के बारे में किंचित जानकारी भी प्राप्त करे।

संसार का विख्यात अद्वितीय साधना तीर्थ, तांत्रिकों, मांत्रिकों, योगियों, यतियों, और सन्यासियों का स्वप्न, सिद्धाश्रम ... जिसमें प्रवेश पाने के लिए मनुष्य तो क्या देवता भी तरसते हैं, सैकड़ों, हजारों वर्ष की आयु प्राप्त योगी आज भी इस आश्रम में साधनारत देखे जा सकते हैं, ऐसे योगी भी हैं, जिन्होंने कुरुक्षेत्र में हुए, महाभारत कालीन युद्ध को अपनी आंखों से देखा है, और श्री कृष्ण, अर्जुन का गीता संवाद अपने कानों से सुना है, इस आश्रम में जाने पर उनकी काया पर न तो आयु का प्रभाव पड़ता है और न शरीर के ह्रास का ही।

ऐसे योगी इच्छा मृत्यु सम्पन्न हैं, कायाकल्प के द्वारा चिरयौवन हैं, साधना के बल पर त्रिकालदर्शी हैं, सिद्धियों के आधार पर उन्हें वहां पर किसी प्रकार की कोई कमी नहीं है, दुर्लभ भौतिक वस्तुएं उन्हें वहां सहज

प्राप्य हैं, एक प्रकार से वह सही अर्थों में संसार का स्वर्ग है, यहां साधना रत व्यक्ति ही सशरीर किसी भी लोक में विचरण कर सकता है, इस संसार की छोटी से छोटी घटना से अवगत रह सकता है, और अपने जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाकर पूर्णता प्राप्त कर सकता है।

इस विश्व में अध्यात्म, मन्त्र-तन्त्र और गूढ़ विद्याएं सर्वथा लुप्त न हो जाए, इसके लिए सिद्धाश्रम समय- समय पर विशिष्ट योगियों और सन्यासियों को इस संसार में पुनः भेजता है, वे सन्यास रूप में रह सकते हैं और चाहें तो गृहस्थ रूप मे भी, इस प्रकार के महा

जाते हैं, उंन्हें पहचान पाते हैं, और उनके चरणों में बैठकर जीवन को धन्य कर पाते हैं।

इसके पूर्व मैंने सिद्धाश्रम जाने वाले मार्ग का संक्षिप्त विवरण दिया है, यह दिव्य आश्रम मान - सरोवर और कैलाश पर्वत के बीच में स्थित है, और सैकड़ों मील में फैला हुआ दिव्य आश्रम है, जहां संसार का प्रत्येक साधन उपलब्ध है।

सिद्धाश्रम नियमों के अनुसार सिद्धाश्रम में कोई भी साधक अपनी योग्यता के बल पर प्रवेश पा सकता है, इसमें स्त्री या पुरुष का कोई भेद नहीं होता, पिछले हजारों वर्षों से इसके बारे में भारत वर्ष को पूर्ण जानकारी सही ढंग से नहीं मिल पाई है, वाराणसी के कविराज गोपीनाथ ने ज्ञानगंज के बारे में अपनी पुस्तक में अवश्य संकेत दिए हैं, मां आनन्दमयी और स्वामी मुक्तानन्द जी ने भी समय-समय पर अपने साधकों को इसके बारे में जानकारी दी है, पर अधिकतर साधक इसके बारे में सर्वथा अनजान ही रहे हैं, इसका कारण जहां सिद्धाश्रम के कठोर नियम हैं, वहां इससे संस्पर्शित योगियों ने भी इस विषय पर अपना मौन बना रखा है, अत्यन्त विशिष्ट बनने के बाद ही उन्हें इसके बारे में जानकारी दी जाती है, परन्तु तब तक काफी समय बीत

चुका होता है।

हम जो जीवन जी रहे हैं, वह वास्तव में ही पशु जीवन है, खाना-पीना, सन्तान पैदा करना और मर जाना, तो पशु भी करते हैं, फिर हम में और उन में अन्तर ही क्या है? अन्तर केवल इतना ही है कि हम इस अधोमुखी जीवन से उठकर ऊर्ध्वमुखी जीवन की तरफ अग्रसर हो सकते हैं, योग्य गुरु के निर्देशन में अपनी कुण्डलिनी जागरण कर सकते हैं और सहस्त्रार भेदन कर उच्च स्तरीय साधना पथ पर अग्रसर हो सकते हैं, साधक यदि दो क्षण रुक कर भली प्रकार से निर्णय ले तो वह गृहस्थ जीवन में रहता हुआ भी साधना पथ पर अग्रसर होकर पूर्णता प्राप्त कर सकता है और सशरीर सिद्धाश्रम मे प्रवेश पा सकता है।

साधना के किसी भी पथ पर चलकर साधक सिद्धाश्रम तक पहुंच सकता है, यह आवश्यक नहीं कि वह तन्त्र विद्या सीखे, या मन्त्र विद्या में ही सफलता प्राप्त करे, पर कुछ संकेत या नियम इस प्रकार के अवश्य हैं, जिनका पालन करना और पूर्ण करना, प्रत्येक सिद्धाश्रम में प्रवेश पाने वाले साधक के लिए अनिवार्य है, इन नियमों के बारे में संक्षेप में जानकारी दे रहा हूँ --

ऐसा प्रत्येक साधक जो इस दिव्य आश्रम में जाना चाहता है, उसके लिए यह आवश्यक है कि वह योग्य गुरु के निर्देशन में अपने शरीर में स्थित सभी केन्द्र बिन्दुओं को चैतन्य करे, और कुण्डलिनी जाग्रत करे, मूलाधार से चलकर सहस्रार तक, सहस्त्रार जाग्रत होते ही उस साधक को भूत और भविष्य की जानकारी स्वतः होने लगती है, किसी भी व्यक्ति को देखते ही उसके सामने उसके जीवन के समस्त क्रिया कलाप चलचित्र की तरह साकार हो जाते हैं।

कुण्डलिनी जागरण के बाद उसका दूसरा चरण प्रारम्भ होता है, जब वह वायवी विद्या से अपने शरीर को हल्का बनाने की क्रिया सीखता है, साथ ही साथ वह 'हादी' और 'कादी' विद्याओं के बारे में भी निष्णांत हो जाता है, जिससे कि उसे भूख और प्यास नहीं लगती और न इससे शरीर कमजोर होता है, साथ ही साथ उसे निद्रा स्तम्भन की जानकारी ले लेनी चाहिए। ये सारी क्रियाएं और विद्याएं कुण्डलिनी-जागरण के बाद प्रयत्न करने पर एक महीने भर में प्राप्त हो जाती हैं, इसके बाद कोई विशेष प्रयत्न करने की जरूरत नहीं होती।

ऐसा होने के बाद साधक को किसी योग्य गुरु के सानिध्य में बैठकर दो महाविद्या सिद्ध कर लेनी

चाहिए। शास्त्र सम्मत कुल दस महाविद्याएं हैं, जिनकी नाम इस प्रकार हैं -१- काली २- तारा ३- षोडशी त्रिपुर बाला सुन्दरी ४- भुवनेश्वरी ५- छिन्नमस्ता ६- त्रिपुर भैरवी ७- धूमावती ८- बगलामुखी ६- मातंगी १०- कमला।

इस दस महाविद्याओं में कोई सी भी दो महाविद्याएं सिद्ध कर लेनी, उस साधक के लिए आवश्यक मानी गई है। जो सिद्धाश्रम में प्रवेश करने का इच्छा रखता है।

ये साधनाएं कठिन अवश्य हैं परन्तु असम्भव नहीं। पुरुष की अपेक्षा स्त्री इस प्रकार की साधनाओं को जल्दी सिद्ध कर सफलता प्राप्त कर सकती है। इस प्रकार की साधनाओं को सिद्ध करने के लिए आवश्यक नहीं है, कि वह साधु या सन्यासी हो जाए, या घर बार छोड़ दे। परिवार में रहकर और गृहस्थ के कर्त्तव्यों का पालन करते हुए भी साधक चाहे तो इन महा विद्याओं को सिद्ध कर सकता है।

जब महा विद्याएं सिद्ध हो जाती हैं तो वे साक्षात् प्रगट हो कर साधक को दर्शन देती हैं, और मनोवांछित इच्छा पूरी करती हैं।

इन महा विद्याओं को सिद्ध करने के बाद यह आवश्यक है, कि वह साधक किसी ऐसे योगी के सम्पर्क में रहे जो कि सिद्धाश्रम में प्रवेश पा चुका हो। सिद्धाश्रम संस्पर्शित साधक के अनुमोदन के बाद ही साधक को सिद्धाश्रम में प्रवेश पाने का अधिकारी होता है। सिद्धाश्रम से आने वाले योगी, सन्यासी रुप में भी भारत वर्ष में विद्यमान हैं, और गृहस्थ रूप में भी जहां तक मेरी जानकारी है, इस समय भारत वर्ष में छः साधक ऐसे हैं, जो कि सिद्धाश्रम संस्पर्शित हैं और वे सन्यास अथव गृहस्थ रूप में गतिशील हैं।

आगे के तीन महीनों में उसे अत्यन्त उच्च स्तरीय साधना उनके माध्यम से प्राप्त होती है, जो कि विलक्षण अद्‌भुत और असाधारण होती है, ऐसा होने पर सिद्धाश्रम संस्पर्शित अनुमादेन करता है कि अब वह साधक सिद्धाश्रम में प्रवेश पाने को अधिकारी है।

इसके बाद वह स्वयं उसे लेकर सिद्धाश्रम जाता है, यह पैदल चलकर भी संभव है, और वायवी विद्या से भी संभव है, वह वायवी विद्या से सशरीर अपने शिष्य को इस देव दुर्लभ सिद्धाश्रम में ले जा सकता है।

सिद्धाश्रम में जाते ही साधक का स्वतः ही कायाकल्प हो जाता है, और उसका शरीर भव्य,

आकर्षक और तेजमय हो जाता है, शरीर की जो कुछ भी शिथिलता होती है, वह एक ही क्षण में उस पुण्य भूमि की वजह से दूर हो जाती है।

इसके बाद साधक वहां किसी ज्योतिर्मय साधिका या साधक के निर्देशन में विशिष्ट क्रियाएं सीखता है, और यदि साधक पुनः गृहस्थ जीवन में आना चाहे तो आ सकता है। इसके बाद बिना गुरु की सहायता के भी साधक अपनी इच्छा से, अनुमति मिलने पर सिद्धाश्रम में जा सकता है, और वहां से पुनः लौट सकता है।

ऐसे साधक तेजस्वी, दीर्घायु और ज्योतिर्मय हो जाते हैं, जिनका योगदान इस विश्व को बेजोड़ रूप से प्राप्त होता है।

कुत्ते-बिल्लियों की तरह जीवन जी कर समाप्त कर देना या घर परिवार के बारे में ही चिन्तन कर, मर जाना, जीवन्त की न्यूनता है। आपको ईश्वर ने दुर्लभ शरीर दिया है, मानव जीवन दिया है, इससे भी बड़ी बात यह है कि आपका जन्म भारत वर्ष में हुआ है, जहां सिद्धाश्रम संस्पर्शित साधक विद्यमान है, अब भी यदि आप अपनें आपको नहीं पहिचाने, क्षूद्र और स्वार्थ वृत्तियों में ही उलझे रहे, तो इसे जीवन का दुर्भाग्य नहीं तो और क्या कहा जा सकता है।

मैं आप सब लोगों का आह्वान करता हूँ, कि आप इस दुःख, छल और स्वार्थमय जीवन को छोड़कर उस पथ पर गतिशील हों, जो कि उच्चतर और दिव्य जीवन है, जिस पथ पर चलने से आप लौकिक और पार लौकिक दोनों लाभ प्राप्त कर सकें।

मैं अपने पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी का आभारी हूँ, कि उन्होंने मुझे अवसर दिया, आप सब लोगों को आशीर्वाद प्रदान करता हूँ, कि आप अपने जीवन को पूर्णता दें।

०००००

संसद : सिद्ध पुरुषों की

६ फरवरी ८३ को 'बृहद् गुजरात ज्योतिष परिषद' ने भव्य समारोह में पूज्य श्रीमाली जी का अभिनन्दन करते हुए उन्हें "ज्योतिष-शिरोमणि" की पदवी से अलंकृत किया।

उसी दिन मुकुन्द भाई डी० गौरा ने पूज्य श्रीमाली जी से 'सिद्धाश्रम' के बारे में इन्टरव्यू लिया था, उस इन्टरव्यू का कुछ भाग प्रस्तुत है . . .

सिद्धाश्रम संसार का श्रेष्ठतम आध्यात्मिक केन्द्र है,

उत्तर - जब से भारतीय ऋषियों ने ज्ञान की लहर फैलायी ,तभी से इस सिद्धाश्रम का अस्तित्व है, यह महाभारत काल से भी पूर्व के ग्रन्थों में विद्यमान है, भगवान श्री कृष्ण स्वयं पाशुपत प्रयोग के लिए कुछ समय सिद्धाश्रम में रहे थे, इसका आधार पुराणों में भी प्राप्त होता है।

प्रश्न - इसकी भौगोलिक स्थिति क्या है?

उत्तर - यद्यपि यह गोपनीय है, और सामान्य रूप से वहां तक जाना सम्भव नहीं है, परन्तु इसकी भौगोलिक स्थिति मानसरोवर और कैलाश पर्वत के बीच में हैं, यह लगभग तीस मील लम्बा तथा बीस मील चौड़ा आश्रम है।

प्रश्न - अभी तक यह प्रकाश में क्यों नहीं आया?

उत्तर - यह तो प्रकाश में आया हुआ ही था, वेदों में और उच्चकोटि के साधनात्मक ग्रन्थों में इस आश्रम का उल्लेख बराबर मिलता है, परन्तु जन साधारण को इसके बारे में कम जानकारी थी, क्योंकि इसका सीधा संबंध उच्चकोटि के योगियों और साधकों से ही था, इसलिए जन सामान्य की जानकारी में यह कम रहा।

प्रश्न - क्या मात्र गायत्री साधना से ही सिद्धाश्रम में पहुंचा जा सकता है?

उत्तर - केवल गायत्री उपासना से सिद्धाश्रम में प्रवेश नहीं पाया जा सकता, गायत्री साधना तो देह और मन को दिव्य

बनाने में सहायक है, तथा अन्य साधनाओं के लिए आधार भूमि बनाने में अनुकूल है, इसलिए अन्य साधनाओं को शीघ्र सम्पन्न करने के लिए गायत्री साधना आधार भूत कही जा सकती है।

प्रश्न - क्या किसी भी धर्म, जाति या वर्ण का व्यक्ति सिद्धाश्रम में जा सकता है?

उत्तर - साधक की कोई जाति, धर्म या वर्ण नहीं होता, साधक पहले साधक होता है, बाद में कुछ और। कबीर मुसलमान जुलाहा थे, रैदास हरिजन थे, मीरा क्षत्रिय थी, तुलसी ब्राह्मण थे, पर ये सभी अलग-अलग वर्ण के होते हुए भी साधक थे, इसलिए साधना में इस प्रकार का बन्धन कोई मायने नहीं रखते।

प्रश्न - क्या निकट भविष्य में कोई ऐसा साधक आपकी दृष्टि में है, जो सिद्धाश्रम जाने की योग्यता प्राप्त कर चुका हो?

उत्तर - ऐसे पांच छः साधक इस समय साधना के अंतिम चरण में हैं, और वे निश्चित रूप से निकट भविष्य में ही सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकेंगे।

वस्तुतः सिद्धाश्रम से सम्बन्धित उनका यह साक्षात्कार सर्वथा नवीन, विश्वास योग्य था, उन्होंने साक्षात्कार में जो भी बात कही, वह अधिकार पूर्ण स्वर में कही। ऐसा लगता था कि उन्हें इसका पूरा ज्ञान है

और अधिकार है, जब मैंने साधकों के लिए कोई संदेश चाहा तो उन्होंने कहा -- "भारत का प्रत्येक व्यक्ति गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए साधनारत हो, और योग्य गुरु के निर्देशन में साधना सम्पन्न कर अपने वर्तमान जीवन में ही सिद्धाश्रम में प्रवेश कर सके, जिससे कि वह रोग, जरा और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर पूर्ण ब्रह्मत्व में लीन हो, अखण्ड आनन्द की अनुभूति करे।"

ooooo

पूज्यपाद गुरुदेव के वरद हस्त तले

१. गुरु दीक्षा : प्रारम्भिक एवं आवश्यक दीक्षा, प्रत्येक साधना की नींव।

२. ज्ञान दीक्षा : जन्म-जन्मांतरों के कर्मों को काटने की दीक्षा। उच्च कोटि की दीक्षाओं के लिए प्रथम चरण।

में आध्यात्मिक उन्नति के साथ ही साथ आवश्यक है भौतिक समृद्धता, इसी का उपाय है यह दीक्षा

५. शक्तिपात द्वारा कुण्डलिनी जागरण : लम्बी साधनाओं की अपेक्षा कुण्डलिनी जागरण की सहज पद्धति। समर्थ व